Hindi 2019-20

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

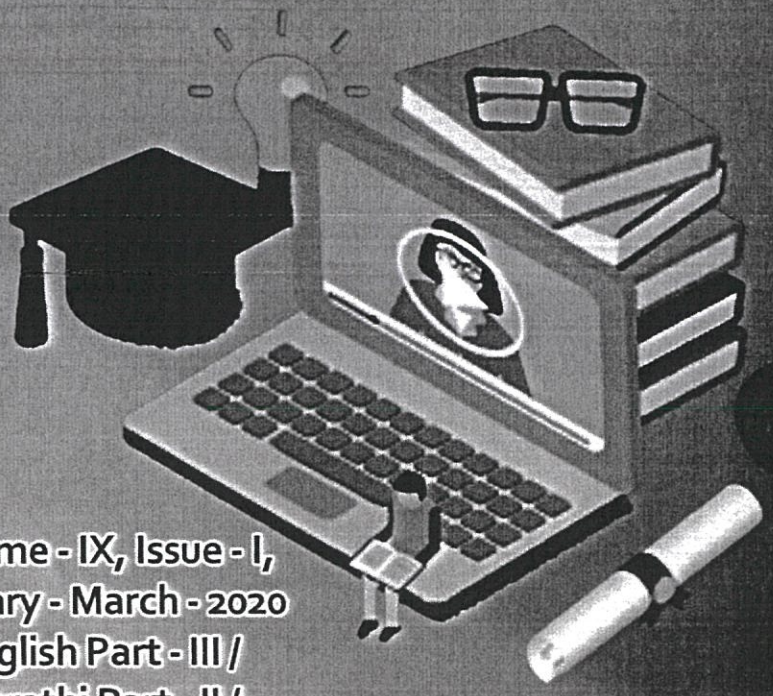

Volume - IX, Issue - I,
January - March - 2020
English Part - III /
Marathi Part - II /
Hindi

AJANTA

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Certified as
TRUE COPY

Ramniranjan ... College,
Ghatkopar (W) ... 400086.

Ajanta Prakashan

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - I January - March - 2020

ENGLISH PART - III / MARATHI PART - II / HINDI

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

❖ PUBLISHED BY ❖
Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

EDITORIAL BOARD

Professor Kaiser Haq
Dept. of English, University of Dhaka,
Dhaka 1000, Bangladesh.

Roderick McCulloch
University of the Sunshine Coast,
Locked Bag 4, Maroochydore DC,
Queensland, 4558 Australia.

Dr. Ashaf Fetoh Eata
College of Art's and Science
Salmau Bin Adbul Aziz University. KAS

Dr. Nicholas Loannides
Senior Lecturer & Cisco Networking Academy Instructor,
Faculty of Computing, North Campus,
London Metropolitan University, 166-220 Holloway Road,
London, N7 8DB, UK.

Muhammad Mezbah-ul-Islam
Ph.D. (NEHU, India) Assot. Prof. Dept. of
Information Science and Library Management
University of Dhaka, Dhaka - 1000, Bangladesh.

Dr. Meenu Maheshwari
Assit. Prof. & Former Head Dept.
of Commerce & Management
University of Kota, Kota.

Dr. S. Sampath
Prof. of Statistics University of Madras
Chennari 600005.

Dr. D. H. Malini Srinivasa Rao
M.B.A., Ph.D., FDP (IIMA)
Assit. Prof. Dept. of Management
Pondicherry University
Karaikal - 609605.

Dr. S. K. Omanwar
Professor and Head, Physics,
Sat Gadge Baba Amravati
University, Amravati.

Dr. Rana Pratap Singh
Professor & Dean, School for Environmental
Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar
University Raebareily Road, Lucknow.

Dr. Shekhar Gungurwar
Hindi Dept. Vasantrao Naik
Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.

Memon Sohel Md Yusuf
Dept. of Commerece, Nirzwa College
of Technology, Nizwa Oman.

Dr. S. Karunanidhi
Professor & Head,
Dept. of Psychology,
University of Madras.

Prof. Joyanta Borbora
Head Dept. of Sociology,
University, Dibrugarh.

Dr. Walmik Sarwade
HOD Dept. of Commerce
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada
University, Aurangabad.

Dr. Manoj Dixit
Professor and Head,
Department of Public Administration Director,
Institute of Tourism Studies,
Lucknow University, Lucknow.

Prof. P. T. Srinivasan
Professor and Head,
Dept. of Management Studies,
University of Madras, Chennai.

Dr. P. Vitthal
School of Language and Literature
Marathi Dept. Swami Ramanand
Teerth Marathwada University, Nanded.

CONTENTS OF ENGLISH PART - III

S. No.	Title & Author	Page No.
1	The Collision of Globalization on Indian Foreign Poli **Shirsat Bhimrao Laxman** **Dr. R. V. Maske**	1-4
2	Impact of Entrepreneurship and Innovation on Indian Economy - An Overview **Shwetha S. M.**	5-10
3	The Vision of a New Woman **Dr. Tasneem Anjum**	11-15
4	Library Security Tools and Techniques **Dr. Vilas Ubhale**	16-21
5	An Overview of Tourism Entrepreneurship in Aurangabad Region **Dr. R. S. Wanare**	22-26
6	Impact of Globalization on Tribal Population **Miss. Papita Pralhad Kamble**	27-33
7	Globalization and Indian English Writing **Pradeep Ingole**	34-37
8	Entrepreneurship Training and Development (Coronavirus-19) **Maya D.Wanjare**	38-44

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

EDITORIAL BOARD

Dr. Jagdish R. Baheti
H.O.D. S. N. J. B. College of Pharmacy,
Meminagar, A/P. Tal Chandwad, Dist. Nashik.

Dr. Sadique Razaque
Univ. Department of Psychology,
Vinoba Bhave University,
Hazaribagh, Jharkhand.

Prof. Ram Nandan Singh
Dept. of Buddhist Studies University of Jammu.

Dr. Safiqur Rahman
Assistant Professor, Dept. of Geography,
Guwahati College Bamunimaidam, Guwahati,
Assam.

Dr. Kishor Salve
Principal, Dr. Babasaheb Ambedkar
College of Arts & Commerce, Nagsenvana,
Aurangabad. (M.S.)

Dr. Bipin Shinde
HOD of English, Dr. Babasaheb
Ambedkar College of Arts & Commerce,
Nagsenvana, Aurangabad. (M.S.)

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

PUBLISHED BY

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	शोधालेख एवं शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
१	जागतिकीकरण से भारत में रोजगार के अवसर व समस्या **प्रा. डॉ. कमलेश नारायणलाल गुप्ता**	१-३
२	मधु कांकरिया के उपन्यासों में नारी विमर्श **कमलेश दगडू सपकाळ**	४-७
३	भूमंडलीकरण और हिन्दी भाषा का स्वरूप **डॉ. मिथिलेश शर्मा**	८-१२
४	वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी भाषा एवं रोजगार **प्रा. डॉ. निशाली पंचगाम**	१३-१७
५	भारतीय फिल्मों में हिंसा और अहिंसा का द्वंद विशेष संदर्भ गांधी टू हिटलर **डॉ. विधु खरे दास**	१८-२१
६	हिन्दी भाषा और वैश्वीकरण **प्रा. डॉ. महेमूद पटेल**	२२-२५
७	हिंदी भाषा, सिनेमा तथा साहित्य का अत:संबंध **डॉ. सुनिता राठोड**	२६-२९
८	वैश्विकीकरण में दलित आत्मकथा और बोलीभाषा **वर्षा प्रल्हाद गायगोले** **डॉ. गोविंद बुरसे**	३०-३४
९	डॉ. भीमराव अंबेदकर का सामाजिक चिंतन **डॉ. विकास सिंह**	३५-३९

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

VOLUME - IX. ISSUE - I - JANUARY - MARCH – 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

Certified as
TRUE COPY

Principal
niranjan Jhunjhunwala College,
atkopar (W), Mumbai-400086.

३. भूमंडलीकरण और हिन्दी भाषा का स्वरूप

डॉ. मिथिलेश शर्मा
रामनिरंजन झुंझुनवाला कॉलेज, घाटकोपर (प.).

प्रारंभ से ही व्यक्ति अपने परिवार, समाज, गांव, राज्य व राष्ट्रीय हित में लगा रहा है। मानव विकास के साथ-साथ चिंतन प्रवृत्ति में भी परिवर्तन आया और आज मानव समूचे विश्व चिंतन में लगा है। यद्यपि, "वसुधैव कुटुंबकम" की भावना रखने वाले भारत की नजर में समूचा विश्व हमेशा से ही एक परिवार रहा है। "विश्वग्राम" के स्वप्न को साकार करने की पहल सर्वप्रथम विकसित देशों ने की और इसे "भूमंडलीकरण" का नाम दिया। विश्व की नई आर्थिक नीति को भूमंडलीकरण का नाम दिया जा रहा है। यद्यपि, इसकी एक सर्व सम्मत परिभाषा तो नहीं है फिर भी तकनीकी और संचार क्रांति ने विश्व को समेटकर एक विश्वग्राम अर्थात ग्लोबलाइजेशन या वैश्वीकरण में बदल दिया।

आज के युग में भूमंडलीकरण बड़ा ही विचारणीय प्रश्न है। विश्व की हर जिंदा बहस में सनसनी खोज की तरह कायम रहता है। अधिकांशतः लोग इसकी निंदा करते हैं व भविष्य को अंधकार में बतलाते हैं। इतना ही नहीं, कभी-कभी ऐसा भी कहते हुए पाए जाते हैं कि भूमंडलीकरण साम्राज्यवाद है, बाजारवाद है, जरूरत है इससे बचने की लेकिन 'कथनी और करनी' में अंतर ही देखा जाता है। जहां एक और व्यक्ति भूमंडलीकरण के खतरों से बचने की बात करता है, वहीं दूसरे ही पल स्वयं मार्केट (बाजार) जाने के लिए कपड़े बदल रहा है, अपने बच्चों को उच्च शिक्षा हेतु अमेरिका भेजने की पूरी कोशिश में लगा हुआ है। इतना ही नहीं विदेश में गए हुए बेटे के बारे में डींग मारते हुए थकता भी नहीं।

इस प्रकार भूमंडलीकरण का यह विरोधी व्यक्तित्व भूमंडलीकरण द्वारा विभक्त व्यक्तित्व ही है। जो राष्ट्र हित भी सोचता है और अवसर पाते ही स्वयं पैसा कमाने हेतु अमेरिका जाने की खोज में रहता है। ऐसे लोगों की कहीं कमी नहीं है, यदि ध्यान से नजर डालें तो यह एक सुखद संयोग है कि देश में जगह-जगह राष्ट्रवादी आंदोलन शुरू हो रहे हैं और लोग राष्ट्रीय अस्मिता को बचाने की कोशिश में जूझ रहे हैं। वहीं एक और भूमंडलीकरण की आर्थिक अवधारणाएं राष्ट्रवादी आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जाकर "ग्लोबल विलेज" का सुंदर स्वप्न दिखा रही हैं।

विश्वग्राम की कल्पना को साकार करने का श्रेय विकसित देशों को जाता है। साथ ही, अल्प विकसित देशों के शोषण की प्रवृत्ति भी इसमें निहित है। भूमंडलीकरण की नई धारणा के अनुसार – "विश्व एक ऐसा बाजार है जो मानव को मानव नहीं रहने देता। उसे क्रेता-विक्रेता अथवा बाजार की वस्तु बना देता है। यह पूर्णतया आर्थिक अवधारणा है, जबकि हमारी अवधारणा मानवीय थी।

भूमंडलीकरण की कोई सर्वसम्मति परिभाषा नहीं है फिर भी तकनीक और संचार क्रांति ने विश्व को समेटकर एक विश्वग्राम में बदल दिया है। विश्वग्राम कि यह सुंदर कल्पना मार्शल मैक्लुहान की देन थी लेकिन हमारे यहां इस अवधारणा के बीज बहुत पहले से ही विद्यमान हैं। हमारे मनीषियों ने "ऋग्वेद" में 'विश्व पुष्टम ग्रामे अस्मिन अनातुरं' उद्घोष किया था। एक विश्वग्राम का सपना हमारे राष्ट्रपिता गांधी ने भी देखा था। ग्राम स्वराज की बात करते हुए उन्होंने कहा था - "मैं नहीं चाहता कि मेरा घर चारों ओर से दीवारों से घिरा रहे, न मैं अपनी खिड़कियों को ही कसकर बंद रखना चाहता हूं, मैं तो सभी देशों की संस्कृति का संचार अपने घर में बे रोक-टोक चाहता हूं। पर ऐसी संस्कृति के किसी झकोरे से मेरे पांव उखड़ जाएँ, यह मुझे मंजूर नहीं। " 1(भूमंडलीकरण और मीडिया – डॉ. कुमुद शर्मा, पृ.13)

विश्वग्राम की कल्पना को साकार करने का श्रेय विकसित देशों को जाता है, जो मूलतः अल्प विकासशील या विकासशील देशों के शोषण की नीति में निहित है। इस समुद्री लहरों के बीच छोटे और कमजोर देश फँसते जा रहे हैं जो चाहकर भी नहीं बच पा रहे हैं। इन देशों के सामने सबसे बड़ा संकट उनकी भाषा और संस्कृति के बचाव का है। भारत जैसे विशाल व प्रगतिशील देश की सबसे बड़ी समस्या यह है कि यहां आदमी कहता कुछ और है, चाहता कुछ है। प्रश्न बड़ा गंभीर है कि भूमंडलीकरण की अवधारणा क्या है इसके लिए लोगों के मन में इतना डर व विरोध क्यों? विरोध की स्थितियां कहां से आई? लोगों के मन में भूमंडलीकरण को लेकर एक ऐसी चिंगारी सुलग रही है जिसकी चपेट में नेता, राजनेता, बुद्धिजीवी, सुधारवादी और क्रांतिकारी सभी वर्ग सम्मिलित हैं।

भूमंडलीकरण की अवधारणा से कुछ विद्वान सहमत नहीं है। उनकी दृष्टि में – आज जो भूमंडलीकरण का स्वरूप है वह ज्यादा खतरनाक है क्योंकि मशीनों के आविष्कार के साथ ही विकसित पूंजीवादी देश कच्चे माल को खरीदने के लिए हमेशा ही तत्पर रहते हैं। अतः कुछ तकनीकी के विकास ने इस व्यापारिक शोषण में अनोखी वृद्धि की

है और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की रणनीति ने साम्राज्यवाद का नया रूप प्रस्तुत किया है। जिसके फलस्वरूप, विकसित पिछड़े देशों को आर्थिक व सांस्कृतिक दृष्टि से अनेक गंभीर समस्याओं से जूझना पड़ रहा है।

इस प्रकार भूमंडलीकरण के समर्थक और विरोधी दोनों ही पक्ष पाए जाते हैं। समर्थकों की अनुसार - भूमंडलीकरण समूचे विश्व को आर्थिक अवसर प्रदान करने वाली नई आर्थिक प्रवृत्ति है।

विरोधी पक्ष का मानना है कि- "भूमंडलीकरण एक ऐसा अंतरराष्ट्रीय दुष्चक्र है जिसमें शामिल होने का सीधा परिणाम यह होगा कि अपने देश और घरेलू उद्योगों की कीमत पर दुनिया के शक्तिशाली देशों और उनके बहुराष्ट्रीय निगमों के आर्थिक हितों को साधने की मजबूरी बन जाएगी"। 2(भूमंडलीकरण और मीडिया – डॉ. कुमुद शर्मा, पृ.16)

समर्थकों के अनुसार भूमंडलीकरण प्रक्रिया है जो वित्त -पूंजी के निवेश उत्पादन और बाजार द्वारा राष्ट्रीय सीमा में ही वर्चस्वी नहीं बल्कि राष्ट्रीय सीमा से पूरे भूमंडलीय आधार पर लगातार अपना प्रसार करना चाहती है। इसका निर्णय क्षेत्र सारी दुनिया है। यह अपनी मुद्रा के कार्य क्षेत्र को लगातार हर बार समायोजित करती रहती है।

भूमंडलीकरण से एक ओर जहां नई सुविधाएं मिली हैं वहीं कुछ परेशानियां भी हैं। विकास का हर कदम जहां प्रकाश देता है वहां थोड़ा सा डर भी बना रहता है कि कहीं तार टूटने से आग न लग जाए। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है, इसे एक प्रक्रिया के रूप में ही समझा जा सकता है।

हिंदी भाषा के विकास में यह कितनी उपयोगी सिद्ध हुई? यह देखना भी अनिवार्य है। जबतक नई पीढ़ी को सभी संसाधन सहजता से हिन्दी में उपलब्ध नहीं कराए जाएंगे तब तक कोई फायदा नहीं है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी संतानों को केवल उपभोक्ता ही न बनाएं बल्कि अपनी भाषा के जरिए मानवीय समाज का अंग बनने दें।

तकनीकी माध्यमों के दौर में भाषा को सही रूप में बनाए रखने के लिए लोकजीवन से शक्ति ग्रहण करने की जरूरत है। भाषा के इस नए रूप को थोड़ा व्याकरण के अनुशासन में बांधने की आवश्यकता है। हिंदी भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है, वह एक राष्ट्र एक संस्कृति व सभ्यता की भाषा है। भाषा को शुद्ध बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। भाषा के सरलीकरण से हमें कोई परहेज़ नहीं किन्तु इसके पीछे छिपी नीयत में कुछ खोट हो तो चिंतित होना स्वाभाविक है। हमें उर्दू फारसी, संस्कृत व अन्य भारतीय भाषाओं व अंग्रेजी के शब्दों से कोई भय नहीं है। भय तो उस हिंदी से है जो आज फिल्मी सितारे बोलते हैं, इंग्लिश में हिंदी।

भूमंडलीकरण के इस दौर में आज संचार माध्यम अधिक सक्रिय हो गए है। जिसमें हिंदी के प्रचार प्रसार में मुख्यतः रेडियो, टेलिविजन व इंटरनेट की भूमिका प्रमुख रही है। यह सच है कि संचार माध्यम अंग्रेजी भाषा को ही अधिक समझते हैं किंतु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि अन्य भारतीय भाषाएं बहुत पीछे हैं। आज जब जापान, चीन, थाईलैंड जैसे देश अपनी ही भाषा और लिपि में बिना किसी संकोच के काम करते हैं तो हम क्यों नहीं? हिंदी में अब यह सुविधा उपलब्ध है हम बिना किसी रोक-टोक के कंप्यूटर पर काम कर सकते हैं। हिंदी के साथ कठिनाई यह है कि पत्र - पत्रिकाएं तथा पोर्टल अपने फोंट का इस्तेमाल करते हैं, अतः इसमें भिन्नता आ जाती है। पर, जब तक इंटरनेट के उपभोक्ता उनके फोंट को अपने कंप्यूटर में डाउनलोड नहीं कर लेते, तब तक उनका उपयोग नहीं कर सकते। यह कार्य बहुत कठिन नहीं है उपभोक्ता संबंधित वेबसाइट से उन फोंट्स को ले सकते हैं। आज युनिकोड फॉन्ट ने इस समस्या का भी हल कर दिया है। अतः आज संपूर्ण विश्व में एकरूपता लक्षित होती है।

इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के आगमन का पहला अवसर 'हिंदी पोर्टल' वेब दुनिया को मिला। वेब दुनिया के संस्थापक श्री विनय छजलानी हैं। इंटरनेट पर हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के समन्वय विषयक उनकी परिकल्पना परिणाम है वेबदुनिया। विश्व की प्रथम वेबसाइट 'नई दुनिया डॉट कॉम' प्रथम बहुभाषी ईमेल सेवी ई- पत्र और पहला हिंदी पोर्टल 'वेब दुनिया कॉम' इंटरनेट पर लाया गया, यह कदम अत्यंत सराहनीय रहा।

यह एक सुखद संयोग है, भारत में इंटरनेट का प्रचलन बढ़ने के साथ-साथ लोग अपनी मातृभाषा में काम करना पसंद कर रहे हैं। आज विश्व की लगभग 50% आबादी नेट पर अपनी भाषा में काम कर रही है।इस बढ़ती लोकप्रियता को देखकर बी.बी.सी. ने अपने समाचार-पत्र को हिन्दी में ऑनलाइन शुरू कर दिया। वहीं माइक्रोसॉफ्ट कंपनी भी हिन्दी में अपने बाजार को बढ़ा रही हैं। इतना ही नहीं, गूगल जैसी सर्च इंजन भी हिन्दी के प्रति पूरी तरह जागरूक है।

भूमंडलीकरण के युग में हिंदी की भूमिका संपर्क संप्रेषण और सानिध्य की है जिसे हिंदी बड़ी कुशलता से निभा रही है। भाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। कोई भी व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में भाषा के द्वारा अपनी बात दूसरों तक पहुंचा पाता है। भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जो जीवन को जीने योग्य व समाज को मूल्यवान बनाती है। आज विविध प्रकार के माध्यमों द्वारा ही हिंदी भाषा सशक्त बनती जा रही है। सिर्फ, पुस्तकों तक की हिंदी का ज्ञान सिमट कर नहीं रह गया है। उच्च प्रौद्योगिकी द्वारा हिंदी भाषा को शिक्षण के नए आयाम प्राप्त हुए हैं। आज

प्राथमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक का शिक्षण नई तकनीकों के माध्यम से सिखाया जा रहा है। जैसा कि स्पष्ट है मानव अपने विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भाषा का प्रयोग करता है। भाषा के अभाव में हम अपने भावों व विचारों को स्पष्ट नहीं कर सकता। अतः उस समय एक सशक्त भाषा की आवश्यकता महसूस होती है। जिसके द्वारा हम हर क्षेत्र की अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें।

आज पूरे विश्व में हिंदी संपर्क की भाषा के रूप में जानी जा रही है । शिक्षा के क्षेत्र में भी विश्व के अनेक देशों में हिंदी पढ़ाई जा रही है भारत में लगभग 66% लोग हिंदी पढ़ लिख लेते हैं। भाषा की दृष्टि से यह देखें तो विश्व में चीनी भाषा इंग्लिश भाषा के बाद हिंदी का ही स्थान है।

प्राचीन काल से हिंदी निरंतर विकासशील भाषा रही है। परंतु, 20वीं सदी के अंतिम दशक में जिस तरह से मीडिया अर्थात टेलीविजन का विस्तार एवं उसकी भाषायी कार्यशैली एवं कार्यक्रमों की बढ़ोत्तरी हुई, वहीं 21वीं सदी के इन दिनों में जिस प्रकार से संचार क्रांति में हिंदी भाषाई मीडिया ने जिस प्रकार भाषा को परिभाषित किया है वह वास्तव में चौका देने वाली हिंदी का नया रूप है।

विभिन्न भारतीय प्रतिभाएं आज नौकरी व व्यवसाय के लिए विश्व के कोने- कोने में जा रहे हैं। जो भारतीय विदेश में जाते हैं वे अपनी भाषा भी साथ में ले जाते हैं। विदेशों में बसे विभिन्न भारतीय एक बार फिर हिंदी की ओर मुड़ रहे हैं। भूमंडल पर हिंदी भाषा दौड़ रही है, वायुमंडल पर उड़ान भर रही है। हिंदी भाषा अपनी अन्य बहनों (भारतीय भाषाओं) के साथ तेजी से पनप रही है यह हम सबके लिए सुखद समाचार है परंतु नई तकनीकी को मित्र बनाएं बिना हमारी भाषा का भविष्य उज्जवल नहीं होगा।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

१. भूमंडलीकरण और मीडिया – लेखक डॉ. कुमुद शर्मा, नई दिल्ली : ग्रंथ अकादमी, 2003

पत्र – पत्रिकाएं

१. अनभै – जुलाई – सितंबर २००६

२. राष्ट्रीय सहारा – १४ जून २००१

साक्षात्कार

१. डॉ. कुमुद शर्मा, रीडर दिल्ली विश्वविद्यालय, ३० जनवरी २००८

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.